بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 29.08.25

हुनैन नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन तथा जलसा सालाना जर्मनी में सम्मिलित लोगों को उपदेश एवं विश्व की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (ज़हूर तिथि 29, 1404 हश)29 अगस्त 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हुनैन के युद्ध से सम्बंधित आज कुछ अन्य विवरण बयान करूंगा।

आँहज़रत ﷺ ने मक्के से रवाना होते समय हज़रत अताब बिन उसैद रज़ी. को अमीर नियुक्त फ़रमाया, ये मक्का के प्रथम अमीर थे जो नियुक्त किये गए। उस समय हज़रत अताब रज़ी. की आयु लगभग बीस वर्ष थी। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ी. को मक्का वालों को दीन की शिक्षा देने का दायित्व दिया गया। हज़रत अताब रज़ी. तथा उनके पिता क़ुरैश वंश के अग्रसर लोग थे एवं इस्लाम के कट्टर विरोधी थे। आप रज़ी. की इस्लाम से दुश्मनी का यह हाल था कि मक्का पर विजय वाले दिन जब हज़रत बिलाल रज़ी. ने अज़ान दी तो आपने अपने साथियों से कहा कि शुक्र है मेरा बाप यह अज़ान सुनने से पहले ही दुनिया से चला गया। अताब रज़ी. ने उसके बाद मक्का पर विजय के दिन इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। आँहज़रत ﷺ ने हज़रत अताब रज़ी. को मक्के का कार्यभार सँभालने के लिए नियुक्त फ़रमाया तथा यह भी निर्देश दिया कि ऐ अताब! मैंने तुम्हें अल्लाह के घर वालों पर निगरान

नियुक्त किया है, इनके साथ विनम्रता से व्यवहार करना। हज़रत अताब रज़ी. आँहज़रत ﷺ के निधन तक मक्के के निगरान रहे, तथा एक कथन के अनुसार आप रज़ी. सिद्दिक़ी दौर में भी मक्के के निगरान रहे।

आँहज़रत ﷺ हुनैन नामक युद्ध के लिए 6 शव्वाल को सप्ताह के दिन रवाना हुए और 10 शव्वाल को हुनैन पहुंचे। इस यात्रा में पवित्र पत्नियों में से हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. तथा हज़रत ज़ैनब रज़ी. आप स. के साथ थीं। हुनैन के युद्ध में सैनिकों तथा हथियारों की दृष्टि से मुसलमानों की संख्या यद्यपि विरोधी सेना की तुलना में कम थी, परन्तु उस समय तक के गत युद्धों की तुलना में यह संख्या सबसे अधिक थी। युद्धों पर लिखने वाले विद्वानों ने लिखा है कि आप स. बारह हज़ार की सेना को लेकर रवाना हुए थे, दस हज़ार तो वह जो मक्का पर विजय पाने के लिए मदीने से आये थे, जबकि मक्का वालों में से दो हज़ार लोग भी आप स. के साथ इस लड़ाई के लिए रवाना हुए।

हज़रत सुहैल रज़ी. बयान करते हैं कि वे रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हुनैन की यात्रा में थे, उन्होंने बड़ी लम्बी यात्रा की, यहाँ तक कि शाम हो गई, मैंने आँहुज़ूर ﷺ के साथ नमाज़ अदा की। इतनी देर में एक सवार आया और उसने कहा या रसूलुल्लाह ﷺ! मैं आप लोगों से आगे गया और मैंने देखा कि हवाज़िन के लोग अपनी महिलाओं एवं पशुओं के साथ जमा हुए हैं। आप स. ने यह सुनकर मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि कल इन्शाल्लाह यह मुसलमानों की विजय के साथ अपने अधिकार में होंगे, फिर फ़रमाया कि आज रात को कौन हमारा पहरा देगा? हज़रत अनस बिन अबी मुर्सल रज़ी. ने कहा मैं पहरा दूंगा। आँहज़रत ﷺ ने उनसे फ़रमाया कि उस घाटी में जाओ, और यह न हो कि हम तुम्हारे कारण धोका खाएं, अर्थात सावधानी के साथ पहरा देना। जब सवेरा हुआ तो आँहुज़ूर ﷺ अपनी नमाज़ के लिए निकले। नमाज़ के बाद आप स. ने फ़रमाया कि तुम्हें मुबारक हो कि तुम्हारा सवार आ गया है। फिर आप स. ने हज़रत अनस रज़ी. बिन अबी मुर्सल से फ़रमाया कि तुम्हारे लिए जन्नत आरक्षित हो गई है।

मालिक बिन औफ़ ने तीन जासूसों को मुसलमानों की सेना में भेजा था, किन्तु ये तीनों जब वापस गए तो इनके होश उड़े हुए थे। इन्होने कहा कि हमने घोड़ों पर सफ़ेद आदमियों को देखा है, यदि युद्ध हुआ तो हम इन लोगों को पराजित नहीं कर सकेंगे, हम ज़मीन वालों को पराजित नहीं कर सकते तो आसमान वालों के साथ कैसे युद्ध करें, यदि हमारी बात मानो तो वापस चले जाओ। मालिक बिन औफ़ ने इन्हें बुरा भला कहा और इनके साथ एक दलेर व्यक्ति को भेजा। वह भी शीघ्र ही वापस आ गया तथा वह भी भयभीत था, उसने भी यही कहा कि उचित यही है कि हम वापस लौट चलें। परन्तु मालिक बिन औफ़ ने यह बात नहीं मानी।

हज़रत सलमा बिन अकूअ रज़ी. बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हवाज़िन में आक्रमण के लिए गए तो एक आदमी आया और बैठ गया और लोगों से बातें करने लगा, फिर वह तेज़ी से ऊँट पर सवार होकर भागने लगा। आँहुज़ूर ﷺ ने उसे देखा तो फ़रमाया कि यह जासूस है इसे पकड़ो तथा मार डालो, अतएव उसकी हत्या कर दी गई।

हुनैन की घाटी ऐसी है जिसमें अनेक घाटियाँ हैं। अतः मालिक बिन औफ़ ने अपने सैनिकों को घाटियों में घात लगा कर बिठा दिया ताकि वह आँहुज़ूर ﷺ तथा आपके सहाबियों पर सहसा आक्रमण कर दें। काफ़िरों की सैन्य व्यवस्था इस प्रकार थी कि सबसे आगे घुड़ सवार, उनके पीछे पैदल

सैनिक, फिर ऊंटों पर महिलाएं एवं बच्चे, और फिर पशु धन इत्यादि।

आँहज़रत ﷺ ने बनू सुलैम का एक हज़ार सैनिकों पर आधारित दल सबसे आगे रखा तथा उसका नेतृत्व ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. को दिया। रसूलुल्लाह ﷺ सेना के बीच में थे। आप स. ने अन्सार एवं महाजिरों में बड़े झंडे बाँट दिए। महाजिरों का एक झंडा हज़रत अली रज़ी. के हवाले किया और एक झंडा हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ी. के सपुर्द फ़रमाया, एक झंडा हज़रत उमर रज़ी. के सपुर्द फ़रमाया। बनू खिज़रज का झंडा हज़रत हबाब बिन मुन्ज़र तथा औस क़बीले का झंडा उसैद बिन हज़ीर के सपुर्द फ़रमाया। हुनैन के इस अभियान में आरंभिक सफलता मुसलामानों को मिली, किन्तु फिर काफ़िरों के अचानक हमले से मुसलमानों में भगदड़ मच गई और मुसलमानों को स्थाई पराजय हुई, किन्तु इसके बाद मुसलमानों को भारी सफलता हुई। सही बुख़ारी की रिवायत के अनुसार हज़रत बरा बिन आज़िब बयान करते हैं कि हमने बनू हवाज़िन पर हमला किया तो वे पराजित हो गए और हम युद्ध से प्राप्त सम्पत्ति को समेटने लगे। यह देखकर उन्होंने हम पर तीरों की बोछार कर दी। इस कारण से वे नौजवान जिन के पास बचाओ का कोई सामान न था, पीठ फेर कर भागे, परन्तु जहां तक रसूले अकरम ﷺ की बात है, आप स. उस समय भी मैदान में डटे रहे और आप स. सफ़ेद खच्चर पर सवार थे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत ﷺ के समस्त युद्धों में सबसे विशेष बात यह है कि उन युद्धों की जो भी स्थिति रही हो, आप स. जैसे साहस एवं निर्भयता का कोई उदाहरण नहीं मिलता। जिस समय बड़े बड़े बहादुरों के भी पाँव उखड़ जाते हैं, आप स. उन अवसरों पर चट्टान की भांति डटे नज़र आते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. हुनैन के दिन तीर खाकर वापस आने की घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि हुनैन की लड़ाई में जब मुसलमानों की सेना पीछे हटी, क्यूंकि दुश्मन के तीरों का हमला अत्यधिक भयावह हो गया था, तो आप स. केवल कुछ सहाबियों को लेकर दुश्मन की ओर बढ़े। हज़रत अबू बकर ने यह देख कर कि दुश्मन का घोर आक्रमण हुआ है, आप स. को रोकना चाहा और आगे बढ़ कर घोड़े की बाग पकड़ ली, परन्तु आप स. ने फ़रमाया- छोड़ दो मेरे घोड़े की बाग को, इसके बाद आप स. यह शेअर पढ़ते हुए आगे बढ़े।

अनन्नबी ला कज़िब अना इब्ने अब्दुल मुत्तलिब

अर्थात मैं ख़ुदा का नबी हूँ और झूठा नहीं हूँ और मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ। इसका मतलब यह था कि इस समय दुश्मनों का इतना घोर आक्रमण है कि दुश्मन के चार हज़ार तीर चलाने वाले तीरों की वर्षा कर रहे हैं। इस समय मेरा आगे बढ़ना मानव सामर्थ्य से अति उच्चतम दिखाई देता है, इससे कोई धोखे में न पड़े और यह न समझे कि मुझमें कोई ईश्वरीय शक्ति है, मैं तो अब्दुल मुत्तलिब का बेटा ही हूँ और एक मानव हूँ, केवल अल्लाह तआला की सहायता मेरे नबी होने के कारण मेरे साथ है।

जब मुसलमानों की सेना बिखरने लगी तो आप स. के पास केवल कुछ लोग ही रह गए थे जिनकी संख्या चार से लेकर तीन सौ तक बयान की जाती है। रिवायत में वर्णन मिलता है कि हुनैन के अवसर पर सब लोग नहीं भागे थे, बल्कि मक्के के नए नए मुसलमानों में से जो मुनाफ़िक़ लोग थे, तथा मक्के के अन्य लोग जो इस युद्ध में शामिल हो गए थे और अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे, उन्होंने

भागना शुरू कर दिया था और यह अकस्मात पराजय इस कारण से हुई क्यूंकि दुश्मनों ने एक साथ तीरों की वर्षा शुरू कर दी थी। अतएव इसकी और अधिक घटनाएँ भी हैं, इन्शाल्लाह आगे बयान होंगी।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने जलसा सालाना जर्मनी के संदर्भ में नसीहतें फ़रमाईं कि अल्लाह तआला इन्हें जलसे के उद्देश्यों को पूरा करने की तौफ़ीक़ दे। अपने ज्ञान, कर्म तथा आध्यात्मिक उन्नति में निरन्तर बढ़ते चले जाने का संकल्प करें और इसके लिए कोशिश करें। विशेष रूप से अल्लाह की स्तुति तथा दुआओं में समय लगाएं। जहां अपने लिए अपनी नस्लों के लिए दुआ करें, वहाँ जमाअत की प्रगति और हर एक विरोधी के षडयन्त्र को मिटाने के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला उनके उपद्रव से बचाए।

फिर दुआओं की प्रेरणा देते हुए हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- पाकिस्तान में रोज़ाना कोई न कोई कष्टदायक घटना हो जाती है। अल्लाह तआला जल्द इन विरोधियों की पकड़ के सामान फ़रमाए। सामान्य रूप से विश्व शांति के लिए भी दुआ करें। ये दुनिया वाले अपने कर्मों के कारण अपने विनाश के निकटतम होते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला हमें इस भयानक विनाश से बचाए। मध्यपूर्व के लिए भी दुआ करें, यहूदी शासन ने तो अत्याचार एवं आतंक की सीमा पार कर दी है, लगता है कि इनके अस्तित्व को ही मिटाना चाहते हैं। पीड़ित बच्चों, महिलाओं, वृद्धों, रोगियों तथा निर्दोष लोगों पर अत्याचार की हद हो गई है, एक प्रकार का सार्वजनिक हत्या अभियान चल रहा है हर जगह। अब तो कुछ सांसारिक राजनेता तथा सरकारें भी कुछ आवाजें उठाने लगी हैं कि यह अत्याचार है, बंद करो इसको, लेकिन अब भी दुष्ट सरकार सुनने को तय्यार नहीं इनकी बातें। धन एवं शक्ति के नशे ने इनको, अमरीका तथा इसके साथियों को अहंकार एवं अत्याचार की चरम सीमा तक पहुंचा दिया है। मुस्लिम देश जो हैं, वे भी कुछ नहीं कर रहे हैं, यदि कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम अपनी स्थितियों को बदल कर अल्लाह तआला के आगे ही झुकें, ताकि अल्लाह तआला ही इनकी सहायता के लिए आए। काश कि इनको यह भी समझ आ जाए। इसी प्रकार मुसलमान मुसलमानों को कष्ट दे रहे हैं, अल्लाह तआला इनको भी इस अत्याचार से रोके।

आज हम अहमदियों का काम है कि इन सब अत्याचारों के विरुद्ध जहां जहां सम्भव है, आवाजें पहुंचाएं और विशेष रूप में दुआएं करें और मन की पीड़ा के साथ दुआएं करें, अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब